

Living the

LOTUS

Buddhism in Everyday Life

4 2017

VOL. 139

FOUNDER'S ESSAY

काल के तीनों अवस्थाओं में जीवन का अस्तित्व

बौद्धधर्म की शिक्षा है कि हमारा ऐहिक जीवन इस संसार तक सीमित नहीं है, बल्कि अतीत, वर्तमान एवं अनागत काल की तीन अवस्थाओं तक इसका विस्तार है। यही कारण है कि वर्तमान को पूर्णता से जीना महत्वपूर्ण है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अपने अतीत की क्षमता को प्रकट करते हैं, और जिस तरह हम वर्तमान में रहते हैं, वह हमारे भविष्य की शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

जीवन का अस्तित्व काल के तीनों अवस्थाओं में है, इस तथ्य की अवहेलना करने का अर्थ है, अपने जीवन के उद्देश्य के प्रभाव को नकारना है। तब कैसा जीवन होगा! जब ऐसा होता है हम क्षणिक काम वासनाओं के सुख की ओर भागते हैं, भौतिक धन सम्पत्ति के पीछे दौड़ते हैं और बिना किसी हिचकिचाहट के संसाधनों का दुरुपयोग करते हैं जो कि पर्यावरण के लिए विनाशकारी है। हम एक ऐसी जीवन शैली का शिकार होते हैं जिसमें हम स्वयं भविष्य की ओर खुलनेवाले पट को बंद कर देते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि जीवित वस्तुओं में अपने विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की एक प्रवृत्ति है। कभी कभी विकास के क्रम में अद्वितीय विशेषताएँ इतनी बढ़ जाती हैं जिसका परिणाम प्रजाति के लिए घातक हो जाता है। उदाहरण के लिए, एक सिद्धांत है कि जीवित प्राणी जब बेहद बड़ा हो जाता है, उसका जीवित रहना असंभव हो जाता है। इस प्रवृत्ति के कारण डायनासोर विलुप्त हो गया। संगठन और समाज कोई भिन्न नहीं है। हर कोई जानता है कि ऐसे बिंदु तक पहुंचने से पहले उन्हें अपनी गति में ब्रेक लगाना चाहिए, लेकिन वास्तव में चीजों को रोकना असंभव हो जाता है।

इस तथ्य को हृदयंगम कर लेना अत्यावश्यक है कि हमारे जीवन का अस्तित्व काल के तीनों क्षेत्रों में फैला हुआ है।

From *Kaisozuikan* 9 (Kosei Publishing Co.), p. 96-97

Living the Lotus Vol. 139 (April 2017)

Published by Rishso Kosei-kai International,
Fumonkan, 2-6-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo, 166-8537 Japan
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: shanzai.rk-international@kosei-kai.or.jp
Senior Editor: Shoko Mizutani
Copy Editor: Parmita Shekhar
Editorial Staff of RK International

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

PRESIDENT'S GUIDANCE

समय को व्यर्थ गँवाना

निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट, रिशशो कोसेइ काइ

विश्व के सामंजस्य में

हममें से बहुत लोग सोचते हैं कि पूरे दिन आराम से लेटे रहना और कुछ नहीं करना समय व्यर्थ गँवाने का उदाहरण है। हम सोचते हैं कि थोड़ा सा भी समय बर्बाद नहीं करना चाहिए बल्कि अपने को व्यस्त रखना चाहिए। हमारा विश्वास है कि समय के सदुपयोग का सार्थक तरीका है जबकि समय व्यर्थ गँवाना जीवन को व्यर्थ गँवा देने से कम नहीं है।

रोमन स्तोइक दार्शनिक सेनेका द यंगर (4BC-65AD) के शब्दों में “प्रत्येक दिन इस तरह जीओ मानो अन्तिम दिन है।” प्राचीन काल से व्यापक रूप से अनुभूत है कि समय को नहीं गँवाना है और प्रत्येक दिन को इस दृष्टि से बीताना महत्वपूर्ण है। जब हम विश्व के अनंत विस्तार के प्रकाश में समय बर्बाद करने के बारे में सोचते हैं, हम जो देखते हैं वह बहुत व्यापक और अधिक सुगम विचार है, जो समय से जुड़ा नहीं है।

बुद्धमार्ग के विषय एक पुस्तक में लिखा है कि प्रातः उठना और रात्रि में सोना, अद्भुत कार्य प्रणाली की अभिव्यक्ति है। हमारा दैनिक जीवन हर समय अद्भुत शक्तियों की कार्य प्रणाली द्वारा अबाध चल रहा है। इस क्षण हम विश्व के अनंत विस्तार के महा सामंजस्य के क्षेत्र में हैं जो उस चमत्कार सम्पन्न की अबाध्य गतिविधियों द्वारा संपन्न हो रहा है।

विश्व की उत्पत्ति का आश्चर्य, मनुष्य के रूप में यहाँ इस पृथ्वी पर जन्म लेने का आश्चर्य, जो जीवनदायी सभी तत्वों से परिपूर्ण है, तथा स्वयं अभी यहाँ विश्व के अनंत विस्तार के महा सामंजस्य के बीच में होने का आश्चर्य—यह सोचते हुए कि इस व्यापक परिप्रेक्ष्य से कैसे समय व्यतीत होता है। मैं अनुभव करता हूँ कि अपने अल्प ज्ञान के आधार पर ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए जैसे कि “वह समय की बर्बादी है,” या “वह अविवेकपूर्ण प्रयत्न है।”

कुछ नहीं करना बल्कि आराम से लेटे रहना, लगता है कि कुछ नहीं बल्कि आलस्य है। बुद्धधर्म के सार की दृष्टि से हम देखते हैं कि न कोई मनुष्य, न कोई वस्तु या न कुछ अन्य है। बुद्धधर्म की सार की दृष्टि से बोलें तो, हम देखते हैं कि न कोई आदमी, न कोई वस्तु, न कुछ अन्य है जिसका कोई उद्देश्य



नहीं है। जैसाकि इस उक्ति में है, “धर्म का सार नहीं तो भ्रमित है और नहीं तो जागृत है, नहीं तो साधारण आदमी है और नहीं तो धर्म परायण है।” जब हम आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण से साधारण आदमी और धर्म परायण के बीच भेद करने के लिए नहीं देखते हैं, तब हम देवों एवं बुद्ध के लोक हिताय कृतियों को समझ सकते हैं।

चमत्कार देखना

ठीक, हम मानव प्राणी समाज में सद्भाव के साथ रहते हैं, फिर, “समय की बर्बादी” का क्या अर्थ है? पुण्डरीक सूत्र की देशना है कि हम सबने “विशेष उद्देश्य से इस लोक में जन्म ग्रहण किया है।” यह भी शिक्षा देता है कि यह उद्देश्य संभवतः उतने लोगों को खुशी देता है जितने आनन्दमय जीवन यापन कर रहे हैं, जितने जन्म लिया है और जितने जन्म लेनेवाले हैं, जिससे कि समन्वय की भावना बनी रहे। इसलिए जिसे हम “समय की बर्बादी” कहते हैं वे वैसे शब्द है जो सबसे अधिक दूसरे लोगों को और आत्मनिष्ठ दृष्टिवालों को चोट पहुँचाता है जो सदा देखते हैं कि उनके लिए क्या अच्छा है। एक खिलाड़ी ने कहा है “समय जीवन का अंग है” और शायद इस अर्थ में, समय बर्बाद करना वास्तव में जीवन को बर्बाद करना माना जा सकता है।

जब हम शायद नहीं जानते है या असावधान है, फिर भी, जीवन बर्बाद होता है। मैंने जीवन की अनित्यता का तीक्ष्ण अनुभव करना सीखा है। हम स्पष्ट समझ सकते है कि हम अभी जीवित है इसके लिए आभारी होना चाहिए और ऐसा बोध आकांक्षा को जन्म देती है। जीवित रहने के आश्चर्य की प्राप्ति एवं कृतज्ञता ज्ञापन के बिना उद्देश्यहीन समय बीताना, समन्वय की भावना को अपने व्यवहार से विखण्डित करने के लिए हमें प्रेरित कर सकता है।

जेन आचार्य दोगेन (1200-1253) ने लिखा है, “अपने कार्य और दिमाग को देखो जो जीवन मरण के चक्र में धूम रहा है और जिससे बोधिसत्वों की आकांक्षा पैदा होती है जो प्रार्थना करते हैं कि दूसरे लोगों को खुशी पहले मिले।” दोगेन का तर्क है कि जब हम अनित्यता और विश्व के अनन्त विस्तार के आश्चर्य का सोचते हैं, जो विश्व के संतुलन को सुदृढ़ रखता है और लोग समन्वय का निर्माण कर रहे हैं। हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए और एक-दूसरे के साथ मिलकर जीवन यापन करना चाहिए।

इन दिनों जापान में वसन्त के आगमन का स्वागत कर रहे हैं। इस समय नए पौधों और फूलों में अंकुर एवं कली निकलते हैं। हम पौधों और फूलों को पसंद करते हैं और उनमें आनंद लेते हैं, इसका अर्थ है कि हम जीवन की क्षणभंगुरता और जीवन के आश्चर्य के प्रति संवेदनशील हैं। साथ ही, यह यहाँ और अब पूर्ण जीवन जीने के महत्व को पहचानने का सुअवसर है।

From Kosei, April 2017



Childcare lifeline

मेरा बच्चा वीडियो गेम्स में लगा रहता है, उसे कैसे बताऊँ कि जीवन अमूल्य है ?

Q

मैं अपने दूसरी कक्षा के पुत्र के वीडियो गेम्स एवं कार्ड गेम्स के विषय वस्तु के विषय में चिन्तित हूँ। बहुत से गेम्स में लड़ाईयाँ हैं जिसमें एक मृतक योद्धा "पुनरुत्थान कार्ड" या "रिसेट बटन" से पुनर्जीवित हो जाता है। जबकि मैं चाहती हूँ कि उसे जीवन के अमूल्य होने का बोध हो, मुझे चिन्ता है कि ये गेम्स उसके मन पर विपरीत प्रभाव कहीं न डाल दें।



A

आप एक ऐसी अद्भुत माँ हैं जो अपने पुत्र को बोध कराना चाहती हैं कि जीवन अमूल्य है, जबकि साथ-साथ कई अन्य चिन्ताओं से निपटने की कोशिश कर रही हैं।

लोगों के सोचने का एक अपना ढंग बन जाता है और लोगों के साथ सम्पर्क में आने से मूल्यांकन की समझ बढ़ती है। हम आशा करते हैं कि आप अपने दैनिक जीवन में इस अवसर का लाभ लें और अपने पुत्र को समझने का अवसर दें कि मरा आदमी कभी जिन्दा नहीं होता है और हमारी वास्तविक दुनिया वीडियो गेम की आभासी दुनिया से अलग है।

ऐसा होने के लिए, बच्चे की भावना को पोषित और समृद्ध होना चाहिए। आप अपने पुत्र को यह भी बतायें कि केवल जानवरों एवं पेड़ों पौधों में ही नहीं बल्कि अचेतन पदार्थों जैसे कि पेंसिल, जूता, खिलौने आदि, में भी जीवन है। इस तरह उसमें ऐसी भावना के विकसित होने में मदद करें जिससे कि वह सभी चीजों का प्रयोग सावधानी से करेगा।

बच्चों में आध्यात्मिक विकास होता है जब उनको शोक, दुःख, दर्द, नापसंद जैसे मनोभावों का अनुभव होता है। मन में ऐसे मनोभाव आते हैं जब वे प्राकृतिक पौधों, छोटे छोटे जीवों के संपर्क में आते हैं या जब वे विभिन्न लोगों से बातें करते हैं। पशुओं को पालना ऐसा ही एक अनुभव है। बच्चे अपने पालतू जानवर से प्यार करते हैं, जब वह मर जाता है, वे उसके साथ नहीं खेल सकते हैं। उस समय माता पिता के लिए महत्वपूर्ण है कि वे उनके शोक में सहभागी बनें, उसका एक छोटा कब्र बना दें और उस पर फूल चढ़ा दें। इस प्रकार के अनुभव से बच्चे सीख सकते हैं कि जीवित प्राणी की मृत्यु का सामना होना दुःखदायी होता है, परन्तु मानव प्राणी उस क्षति से संभलने का प्रयत्न करता है।

यह भी, यदि बच्चे को दादी या दादा की मृत्यु का सामना होता है, वे इस तथ्य से अवगत होते हैं कि वे उनसे कभी बातें नहीं कर सकेंगे। यद्यपि यह अनुभव दुःखदायी होता है, बच्चे मृत्यु का मतलब समझ सकेंगे। एक अन्य बात जो उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि जीवन के अमूल्य होने की बात से अवगत कराना है, वह माता पिता का बच्चे के साथ प्यार से दिल खोलकर बातें करना है। क्या आप बच्चे से खुलकर कहती हैं, "तुम माता पिता के कोष हो,"

साथ ही इसे व्यवहार में भी व्यक्त होने दें ? लोग दूसरों के जीने के ढंग की प्रशंसा करते हैं जब देखते हैं कि उनको प्रधानता दी जा रही है। इसलिए जब आप अपने पुत्र को देखते हैं कि वह मित्रों के प्रति सद्भाव रखता है और दयाभाव से काम करता है, कृपया उससे कहें "तुम बड़े दयालु हो!" तुम्हारे मित्र बड़े प्रसन्न दिख रहे थे। मैं खुश हूँ कि तुम इतने सहृदय बन गये हो!" आपकी सराहना उसे आनन्दित करेगा और मित्रों के प्रति अपने सद्भावपूर्ण कार्यों का एवं दूसरों के प्रति दयाभाव रखने के महत्त्व का पुनरावलोकन करने के लिए उत्साहित करेगा। ये सारी चीजें एक साथ आपके पुत्र द्वारा दूसरों के जीवन की महत्ता को आंकने के महत्त्व को ग्रहण करने में सहायता करेंगी। बच्चे उसी रूप में बड़े होते हैं जैसा कि उनका लालन पालन होता है। हम आशा करते हैं कि माता पिता और बच्चे के बीच प्रत्येक दिन की बातचीत बच्चे के दिल और दिमाग के विकास में सहयोग करेगा।



Point 1 बच्चे को जानना चाहिए कि मृतक पुनः जीवित नहीं होते हैं।

गेम्स एवं टी. वी. देख देख कर कुछ बच्चे समझ लेते हैं कि मरकर फिर जी जाते हैं। वयस्कों का यह कर्तव्य है कि बच्चों को मृत्यु के परम सत्य का ज्ञान दें।

Point 2 बच्चों का माता पिता के प्यार में विश्वास का अधिकार है।

जब बच्चे मात्र जानते हैं कि माता पिता उन्हें प्यार करते हैं, क्या वे समझेंगे कि दूसरे भी समान रूप से अमूल्य हैं। ऐसा इसलिए है कि बच्चे जानते हैं कि वे अमूल्य हैं, माता पिता के प्यारे हैं तथा उनमें दूसरों के प्रति दयावान रहने की कामना पनपेगी और बढ़ेगी।

(टोक्यो अनुसंधान संस्थान के परिवार शिक्षा द्वारा प्रदान उत्तर)

The Tokyo Research Institute for Family Education इस आधार पर काम करता है कि "यदि माता पिता बदल सकते हैं तो बच्चों में भी परिवर्तन आयेगा।" हम विभिन्न स्थानों में प्रेजेंटेशन देते हैं और संबन्धित माता पिता को अपनी सलाह देते हैं।
"Family education from their children" कार्यक्रम में हमारी मदद से अनेक हँसते खेलते परिवार निकल आये।

जीवन की अमूल्यता के साथ बढ़ना

प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो की हम सबको अपनी एक पुस्तक में शिक्षा है कि “संसार में असंख्य जीवित प्राणी अस्तित्व में हैं और उनमें हम सबने मानव के रूप में जन्म ग्रहण किया है, यह इतना दुर्लभ है कि आश्चर्यजनक प्रतीत होता है। इसलिए, कुछ है जिसके लिए हम सबको कृतज्ञ होना चाहिए” (*Kokoro no Manako o Hiraku [Opening the mind's eye]*, pp. 70–7)

जीवन के अमूल्य भाव अपने संतानों तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि अपने अनुभव से जीने की सीमित सीमा को समझना होगा। बढ़ते पौधे या कीड़े पालने से ऐसे अनुभवों का अच्छा उदाहरण मिलता है और आप एवं आपके बच्चे एक साथ उनकी क्रियाओं से अनुभव ले सकते हैं। यह देखकर कि कैसे छोटे छोटे जीव बढ़ते हैं और शीघ्र खत्म हो जाते हैं, आप दोनों प्रत्यक्ष देख सकते हैं कि जीवन कितना अल्प है। यह आपके लिए बड़े महत्त्व का है कि आप अपने बच्चे को उसके जन्म की कहानियाँ सुनायें और बतायें कि जन्म लेना कितना आश्चर्यजनक है।

इस तरह के बातचीत के सिलसिले में आप और आपके पुत्र में यहाँ और अब के अपने जीवन के अमूल्य एवं अद्भूत होने की प्रशंसा का भाव विकसत होगा। ऐसी माँ और पुत्र के बीच बातचीत का सिलसिला हर दिन चलता है तो आपके पुत्र में ऐसे दिल और दिमाग का विकास होगा जो अमूल्य जीवन का आदर करेगा।

(धर्म शिक्षा और मानव संसाधन विकास विभाग, रिश्शो कोसेइ काइ द्वारा संपादकीय पर्यवेक्षण)



Please give us your comments!



We welcome comments on our newsletter Living the Lotus.

living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

कृतज्ञता ज्ञापन द्वारा संसार में प्रकाश फैलायें

क्या आपको प्रेसिडेंट निवानो का नववर्ष का निर्देश याद है ? मैंने बैंकाक केन्द्र के सदस्यों से ऐसा पूछा था। उन्होंने खुशी से उत्तर दिया, "उसका सार 'आभारी होना' है।" हाँ ! यह सही था। अपने निर्देश में प्रेसिडेंट निवानो ने लिखा है, हम दैनिक जीवन में आभार प्रकट करें और इसे आदत बना लें। अतः आप सबका अभ्यास कैसा चल रहा है।

बैंकाक संघ के एक सदस्य ने कहा, "एक दन में सौ से अधिक बार 'धन्यवाद कहता हूँ', क्योंकि मेरी दुकान में बहुत सारे ग्राहक आते हैं और उनमें प्रत्येक को कई बार धन्यवाद देता हूँ।" एक दूसरे सदस्य ने कहा, "क्योंकि मैं अकेला ही रहता हूँ, मेरे घर में और कोई नहीं है जिसे सीधे धन्यवाद कहने का अवसर मिले। इसलिए भोजन समेत प्रत्येक चीजें जिसे मैं ग्रहण करता हूँ, सर्वप्रथम मैं हाथों को जोड़कर 'धन्यवाद बोलता हूँ।" जब मैंने बैंकाक के सदस्यों को धन्यवाद कहने की खुशी को व्यक्त करते सुना, मुझे हो गया कि धन्यवाद ज्ञापन के अभ्यास से खुशी आती है।

हम सब ने प्रेसिडेंट निवानो से संसार में प्रकाश बनना सीखा है। निर्देश का प्रकाश चमककर निराशा, क्रोध एवं भ्रान्ति के अन्धकार को दूर भगाता है। हम अपने दैनिक जीवन में धन्यवाद ज्ञापन करें और इसे अभ्यास में रखने की आदत बना लें।

शोको मिजुतानी

रिश्शो कोसेइ काइ अन्तरराष्ट्रीय विभाग निर्देशक



Rissho Kosei-kai Overseas Dharma Centers

2017

Rissho Kosei-kai International

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First Street Suite #1 Los Angeles
CA 90033 U.S.A

Tel: 1-323-262-4430 Fax: 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, U.S.A.

Tel: 1-253-945-0024 Fax: 1-253-945-0261

e-mail: rkseattlewashington@gmail.com

http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.

Tel: 1-210-561-7991 Fax: 1-210-696-7745

e-mail: dharmasanantonio@gmail.com

http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay

2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.

Tel: (727) 560-2927

e-mail: rktampabay@yahoo.com

http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.

Tel: 1-808-455-3212 Fax: 1-808-455-4633

e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.

Tel: 1-808-242-6175 Fax: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, U.S.A.

Tel: 1-808-325-0015 Fax: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.

Tel: 1-323-269-4741 Fax: 1-323-269-4567

e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.

Tel: 1-650-359-6951 Fax: 1-650-359-6437

e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento

Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, U.S.A.

Tel: 1-212-867-5677 Fax: 1-212-697-6499

e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, U.S.A.

Tel: 1-773-842-5654

e-mail: murakami4838@aol.com

http://home.earthlink.net/~rkchi/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112, U.S.A.

Tel & Fax: 1-405-943-5030

e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Klamath Falls

1660 Portland St. Klamath Falls, OR 97601, U.S.A.

Rissho Kosei-kai, Dharma Center of Denver

1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204, U.S.A.

Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

425 Patterson Road, Dayton, OH 45419, U.S.A.

http://www.rkina-dayton.com/

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,

CEP 04116-060, Brasil

Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Fax: 55-11-5549-4304

e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,

CEP 08730-000, Brasil

Tel: 55-11-5549-4446/55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei

4F, No. 10 Hengyang Road, Zhongzheng District, Taipei City 100, Taiwan

Tel: 886-2-2381-1632 Fax: 886-2-2331-3433

http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Taichung

No. 19, Lane 260, Dongying 15th St., East Dist.,

Taichung City 401, Taiwan

Tel: 886-4-2215-4832/886-4-2215-4937 Fax: 886-4-2215-0647

Rissho Kosei-kai of Tainan

No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan

Tel: 886-6-289-1478 Fax: 886-6-289-1488

Rissho Kosei-kai of Pingtung

Korean Rissho Kosei-kai

6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea

Tel: 82-2-796-5571 Fax: 82-2-796-1696

e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan

3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea

Tel: 82-51-643-5571 Fax: 82-51-643-5572

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,

North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960
e-mail: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax : 39-06-48913949
e-mail: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK**Rissho Kosei-kai of Venezia**

Castello-2229 30122-Venezia Ve Italy

Rissho Kosei-kai of Paris

86 AV Jean Jaures 93500 Tentin Paris, France

International Buddhist Congregation (IBC)

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 Fax: 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp <http://www.ibt-rk.org/>

Rissho Kosei-kai of South Asia Division

5F Fumon Hall, 2-6-1 Wada, Suginami, Tokyo, 166-8537, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 Fax: 81-3-5341-1224

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division**Rissho Kosei-kai of Central Delhi**

224 Site No.1, Shankar Road, New Rajinder Nagar, New Delhi,
110060, India

Rissho Kosei-kai of West Delhi

66D, Sector-6, DDA-Flats, Dwarka
New Delhi 110075, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar,
Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur,
Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Singapore**Rissho Kosei-kai of Phnom Penh**

#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Thai Rissho Friendship Foundation

201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 Fax: 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka

House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani

Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station: Mirshari,
District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya

Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama

Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar

Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria

Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham

Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan

West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni

Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu**Rissho Kosei-kai Dhamma Foundation, Sri Lanka**

382/17, N.A.S. Silva Mawatha, Pepiliyana, Boralessgamuwa, Sri Lanka
Tel & Fax: 94-11-2826367

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa**Rissho Kosei-kai of Habarana**

151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Other Groups**Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai**